K-3

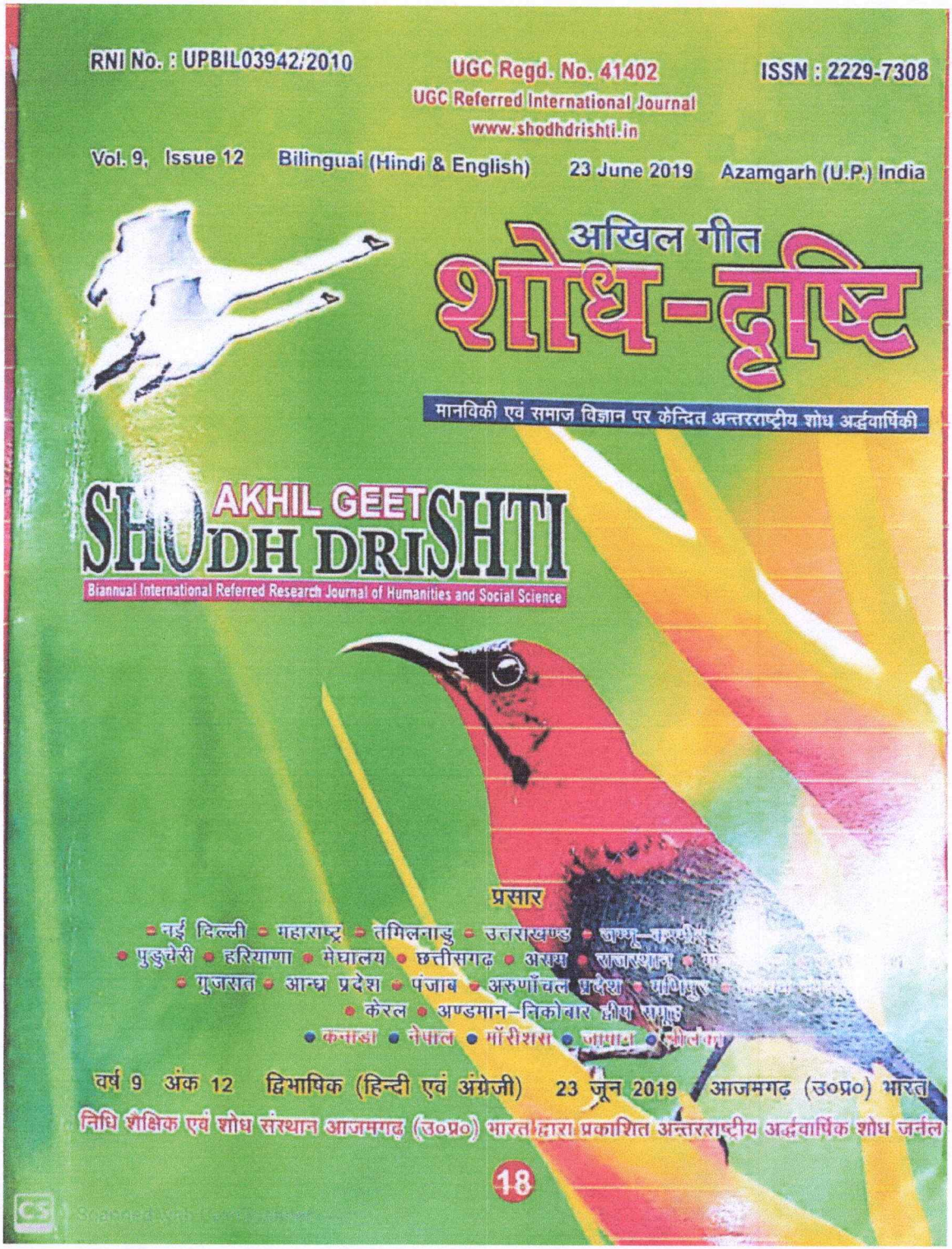
RNI No. : UPBIL03942/2010
UGC Regd. No. 41402
UGC Referred International Journal
www.shodhdrishti.in
ISSN : 2229-7308
Vol. 9, Issue 12 Bilinguai (Hindi & English) 23 June 2019 Azamgarh (U.P.) India
अखिल गीत
शोध-दृष्टि
मानविकी एवं समाज विज्ञान पर केन्द्रित अन्तरराष्ट्रीय शोध अर्द्धवार्षिकी
AKHIL GEET
SHODH DRISHTI
Biannual International Referred Research Journal of Humanities and Social Science
प्रसार
नई दिल्ली • महाराष्ट्र • तमिलनाडु • उत्तराखण्ड
पुडुचेरी • हरियाणा • मेघालय • छत्तीसगढ़ • असम
गुजरात • आन्ध्र प्रदेश • पंजाब • अरुणाँचल प्रदेश
केरल • अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह
कनाडा • नेपाल • मॉरीशस
वर्ष 9 अंक 12 द्विभाषिक (हिन्दी एवं अंग्रेजी) 23 जून 2019 आजमगढ़ (उ०प्र०) भारत
निधि शैक्षिक एवं शोध संस्थान आजमगढ़ (उ०प्र०) भारत द्वारा प्रकाशित अन्तरराष्ट्रीय अर्द्धवार्षिक शोध जर्नल
18

RNI. No. : UPBIL 03942/2010 ISSN : 2229-7308

वर्ष 9 अंक 12 द्विभाषिक (हिन्दी एवं अंग्रेजी) 23 जून 2019 आजमगढ़ (उ0प्र0) भारत

अखिल गीत शोध-दृष्टि

मानविकी एवं समाज विज्ञान पर केन्द्रित अन्तर्राष्ट्रीय वार्षिक शोध–जर्नल

अनुक्रम contents

क्रम सं0	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ संख्या
	शोध आलेख		
	सम्पादकीय		10–12
•	हिन्दी		13–191
1.	कामायनी की कथावस्तु	–डॉ. गीता सिंह	13–18
2.	बिहारी के काव्य में श्रृंगारिकता	–गयना कल्पनि गुणतिलक	19–20
3.	क्षमा करो हे वत्स	–वशिष्ठ अनूप	21–24
4.	जैनेन्द्र का आध्यात्मिक दृष्टि से विचार	–डॉ0 इन्दु कन्नौजिया	25–28
5.	पूर्वांचल के लोकगीत : कुछ रस, कुछ रंग, कुछ राग	–डॉ0 सुप्रिया सिंह	29–32
6.	नई कविता का विकास व धूमिल	–डॉ0 (श्रीमती) वीना रानी सिंह	33–38
7.	कला और वेदना के रोमानी कलाकार : निर्मल वर्मा	–सुनील कुमार प्रजापति	39–42
8.	इक्कीसवीं सदी की कविता और उसकी जनपक्षधरता : एक विवेचन	–डॉ0 एम. हसीन खान	43–46
9.	तुलसीदास की समाज दृष्टि	–निधि सिंह	47–51
10.	दिनकर की कविता में विक्षोभ और प्रतिरोध	–सुधीर त्रिपाठी	52–57
11.	विष्णु पुराण में योग धर्म	–डॉ0 दिवाकर मणि त्रिपाठी	61–67
12.	दाम्पत्य प्रेम का अनूठा चितेरा	–नीलिमा सिंह	58–62
13.	भारतीयेत्तर साहित्य में स्त्री–विमर्श	–डॉ0 रश्मि रानी	63–72
14.	समकालीन कहानी और बदलते सामाजिक मूल्य	–व्यंजना सिंह	73–80
15.	चन्द्रकान्ता की कहानियों में आतंकवाद से पीड़ित स्त्रियों की व्यथा–कथा	–पवन कुमार रावत –राजेश कुमार राव	81–85
16.	उत्तर आधुनिकता की अवधारणा	–अंजनी कुमार श्रीवास्तव	86–97
17.	संस्मरण साहित्य और काशीनाथ सिंह	–डॉ0 कल्याण कुमार झा	98–101
18.	हिन्दी दलित साहित्य यात्रा–वृत्तांत और राजपाल सिंह 'राज'	–डॉ0 रवि रंजन	102–110

संस्मरण साहित्य और काशीनाथ सिंह

–डॉ० कल्याण कुमार झा*

संस्मरण लेखन, लेखक के स्मृति से संबंधित होता है। लेखक की स्मृति में वही भाव और बोध रहता है, जो उसे गहराई से उद्वेलित किया हो। संस्मरण का शाब्दिक अर्थ बार–बार स्मरण करना या महत्वपूर्ण घटनाओं, कृत्यों आदि का उल्लेख करना है। स्मृति के आधार पर किसी विषय के संबंध में लिखित लेख या ग्रन्थ को संस्मरण कहते हैं।

हिन्दी गद्य की नवीन विधाओं में संस्मरण एक महत्वपूर्ण स्थान है। संस्मरण का मूल अर्थ सम्यक् स्मृति है। यह एक ऐसी स्मृति है जो वर्तमान को अधिक सार्थक, समृद्ध और संवेदनशील बनाती है। संस्मरण विवरणात्मक एवं आत्मपरक रचना है, जो मूलतः अतीत एवं वर्तमान के बीच एक सेतु का काम करता है। जीवन की सर्वमान्य घटनाएँ जो हमारे मानस पटल या स्मृति में रह जाती हैं उसी को कलात्मक ढंग से शब्दबद्ध किया जाता है तो वह संस्मरण का रूप धारण करता है, संस्मरण के संबंध में डॉ. रामचन्द्र तिवारी ने कहा है–

"संस्मरण किसी स्मर्यमाण की स्मृति का शब्दांकन है। स्मर्यमाण के जीवन के वे पहलू, वे संदर्भ और वे चारित्रिक वैशिष्ट्य जो स्मरणकर्ता को स्मृत रह जाते हैं, उन्हें वह शब्दांकित करता है। स्मरण वही रह जाता है, जो महत, विशिष्ट, विचित्र और प्रिय हो। स्मर्यमान को अंकित करते हुए लेखक स्वयं भी अंकित होता चलता है।"[1]

संस्मरण और रेखाचित्र में बहुत सूक्ष्म अंतर है, यह रेखाचित्र से मिलती–जुलती विधा है। संस्मरण और रेखाचित्र में भेदक चित्र खिंच पाना काफी कठिन कार्य है ये दोनों विधा एक दूसरे के पूरक हैं। संस्मरण में किसी चारित्रिक गुणों से युक्त किसी महान व्यक्ति को याद करते हुए उसके परिवेश के साथ उसका प्रभावशाली वर्णन किया जाता है। संस्मरण आत्मकथात्मक विधा होते हुए भी आत्मकथा से भिन्न है किन्तु व्यापक रूप में संस्मरण को आत्मचरित्र के करीब भी माना जा सकता है, आत्मचरित्र में लेखक अपने जीवन कथा का वर्णन करता है, संस्मरण लेखन में लेखक का दृष्टिकोण भिन्न रहता है, लेखक वही लिखता है जो स्वयं देखता है, स्वयं अनुभव करता है जिसमें लेखक की संवेदनाएँ एवं अनुभूतियाँ अंतरनिहित होती हैं। किसी वस्तु विशेष के देखने के बाद उससे संबंधित बातों का स्मरण में आना संस्मरण कहलाता है, जो निम्न पंक्तियों में द्रष्टव्य है–

*एसोसिएट प्रोफेसर, विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर (बिहार)

"वस्तुविशेष को देखकर, जो उसके सदृश्य के कारण पूर्वानुभूत वस्तु की आन्तरिक स्मृति जागती है वही संस्मरण है।"[2]

हिन्दी में संस्मरण लेखन का आरम्भ 20वीं शती के तीसरे दशक में आरम्भ हो चुका था। हिन्दी के प्रथम संस्मरण लेखक पद्म सिंह शर्मा का 'पदम पराग' 1929 ई. में प्रकाशित हुआ था। श्रीराम शर्मा का 'शिकार', 1936 महादेवी वर्मा का 'पथ का साथी' 1956 ई., शिवपूजन सहाय का 'वे दिन वे लोग' 1946 ई., कमलेश्वर का 'मेरे हमदम मेरे दोस्त', 1975 ई. में प्रकाशित हुआ। काशीनाथ सिंह इन्हीं संस्मरण लेखकों की अगली कड़ी हैं।

हिन्दी संस्मरण लेखन में काशीनाथ सिंह एक प्रसिद्ध नाम है, काशीनाथ सिंह के संस्मरण हिन्दी संस्मरण विधा में अपनी विशेष रचनात्मकता के कारण अलग से जाने जाते हैं, इनके तीन संस्मरण प्रकाशित हैं–

1. याद हो कि न याद हो–1992.
2. आछे दिन पाछे गए–2004.
3. घर का जोगी जोगड़ा–2006.

काशीनाथ सिंह के संस्मरण अपने व्यंग्य के लिए उल्लेखनीय हैं। ये अपने समकालीन साहित्यकारों के पाखण्ड पर कुठाराघात भी करते हैं। इनके संस्मरण में व्यंगों के साथ हास्यरसों की भी प्रधानता है। काशीनाथ सिंह के संस्मरण में एकरूपता नहीं है। बल्कि आदि से अंत तक विषय वस्तु, रूप, बुनावट, भाव आदि में विविधता पाई जाती है। काशीनाथ सिंह के संस्मरण के संबंध में राजेन्द्र यादव ने लिखा है–

"काशी के समकालीन कथाकारों में जो साहसिकता दिखाई दी थी, वह अपने सबसे अधिक ऊर्जावान रूप में काशी के संस्मरणों में दिखाई देती है। मुझे तो यहाँ तक शक होता है कि भविष्य में काशी केवल अपने संस्मरणों के लिए ही याद किए जायेंगे। उनकी बेबाकी, निडरता, मजाक और स्थानीय लोक–शक्ति बिल्कुल एक नये काशी से हमारा परिचय कराती है। मुझे लगता है कि काशी को और संस्मरण लिखने चाहिए। संस्मरणों में ही वे अपने श्रेष्ठ रूप में हमारे सामने आते हैं।"[3]

काशीनाथ सिंह उपन्यास और कहानी की तरह संस्मरण लेखन के लिए भी काफी प्रसिद्ध है। इनके संस्मरणों की भाषा शैली इनकी रचनात्मक प्रतिभा का परिचय कराती है।

इनके संस्मरण 'बातों का दस्तावेज' है जो इसे रोचक और लोकप्रिय बनाता है।

काशीनाथ सिंह का प्रथम संस्मरण 'याद हो कि ना याद हो' 1992 में प्रकाशित है। इसमें 7 आत्मकथात्मक या संस्मरणात्मक निबंध संग्रहित है। 1987 से लेकर 1991 यानी चार साल की अवधि में लिखे गये सात निबंधों में हजारी प्रसाद द्विवेदी, त्रिलोचन शास्त्री, नामवर सिंह, धूमिल, रवीन्द्र कालिया, विजय मोहन सिंह, दूधनाथ सिंह, ज्ञानरंजन, नागानंद जैसे विश्वविद्यालय के सहकर्मियों का उल्लेख है। इनकी भाषा किसी फिल्म के रील को टक्कर देती प्रतीत होती है। यह सिर्फ चित्र नहीं देती पूरा वातावरण देती है जिनमें और सब चीजों के साथ एक नई दृष्टि मिलती है जिसे पढ़कर हम अपने समकालीन को देखें तो कैसे देखें? इसका उत्तर प्राप्त होता है।

काशीनाथ सिंह के संस्मरण को पढ़ने से न केवल व्याधियों के जीवन संबंधित विविध जानकारियाँ मिलती है बल्कि एक सजीव चित्र

उभरकर सामने आ जाता है। काशीनाथ सिंह ने अपने गुरु भाई, मित्र तथा संबंधियों के संदर्भ में छोटी–छोटी बात बड़ी बेबाकी से कहा है। 'कॉचीबाबू के चुहले' शीर्षक निबंध में काशीनाथ सिंह के मँझले भाई बाढ़ की विभिषिका के बाद काशीनाथ सिंह के पास जाते हैं तथा काशीनाथ सिंह को कुछ इस प्रकार डॉटते हैं–

"कॉची बाबू उनके तेवर देखकर चिन्तित हुए। फिर भी उन्होंने मझले भाई के सम्मान में वह सब किया, जो छोटे भाई को करना चाहिए। सामने मेज पर एक गिलास पानी और गुड़ रखा।

"यह क्या सुन रहा हूँ मैं?

'क्या?'

'तुमने कुछ लिखा है किसी पत्रिका में?'

काची बाबू चुप।

'एक जने कम थे घर को बरबाद करने के लिए?'

काची बाबू फिर चुप।

'कान पकड़ों कि फिर यह कुकर्म नहीं करोगे।

'नहीं करुँगा।' काची बाबू बोले ऐसे नहीं। कान पकड़ो और प्रतिज्ञा करो– मुँह से बोलकर तभी पानी पिऊँगा।

इतना समझा–बुझाकर गया था और उसका कोई असर नहीं?

काची बाबू ने कान पकड़े और प्रतिज्ञा की।"[4]

काशीनाथ सिंह का दूसरा 'संस्मरण आछे दिन पाछे गए' 2002 में प्रकाशन है जो काशीजी के बचपन और 19वीं शदी में देश के हाल का चित्रण किया है, इस संस्मरण में काशीजी के पत्रिका सम्पादन, जापान यात्रा, कहानी सृजन आदि प्रसंगों का चित्रण है, इसमें कुल संस्मरण हैं जो काशीनाथ सिंह के जीवन परिचय के साथ–साथ उनके व्यक्तित्व के विकास का भी रेखांकन है। 'रहना नहीं यह देश विरान है' में बचपन जवानी और विश्वविद्यालय का लेखा–जोखा है। कलकत्ता में बांकेलाल उनके मित्र पर आधारित है 'मुसाफिर खाने में चार दिन' उनके दो शिष्य रमेश और महेश्वर का चित्रण है। 'कहानी की वर्णमाला और मैं' में कहानी के प्रति उनके दृष्टिकोण का वर्णन है। '21वीं सदी के देश का सफर उनके जापान यात्रा पर आधारित है। 'परिवेश स्मृतियों' में लेखक द्वारा पत्रिका का सम्पादन का विवेचन है। तीसरे भाई की खोज में प्राण पियारे ने कमला प्रसाद को केन्द्र में रखकर संस्मरण लिखा है। कमला प्रसाद से तीसरी मुलाकात में अपने समय क्रिकेट के लोकप्रियता का वर्णन काशीजी ने कुछ इस प्रकार किया है–

"कमला का ड्राइंग रूम!

मैं था और मेरे साथ वे 'वसुधा' के सहायक संपादक विजय अग्रवाल। पूरा मुल्क उन दिनों क्रिकेट के बुखार की चपेट में था। श्रीलंका, भारत, पाकिस्तान और साउथ अफ्रीका की वनडे सीरीज चल रही थी। उस दिन का मैच भारत और पाकिस्तान के बीच था और उसके शुरू होने में अभी दो घंटे बाकी थे। लेकिन विजय सबेरे से ही बेचैन और बेसब्र थे।"[5]

काशीनाथ सिंह का तीसरा और अंतिम संस्मरण है 'घर का जोगी जोगड़ा' जो 2006 में प्रकाशित है इसमें नामवर सिंहजी की पत्नी की मृत्यु उसके बाद की जीवन गाथा फ्लैशबैक शैली में प्रस्तुत की है इसमें संकलित गर्वीली गरीब 'याद हो कि ना हो' संस्मरण में भी प्रकाशित है। इस संस्मरण में काशीनाथ सिंह के बचपन, पढ़ाई–लिखाई, भाई–परिवार, बॅटवारे की व्यथा का चित्रण है। इसमें

नामवर सिंह की पत्नी, बेटा उनके दामपत्य जीवन आदि का चित्रण है, काशीनाथ सिंह के संस्मरण में अपनी भौजी का दुखी रहना और बड़े भाई नामवर जी के बेटे–बहु द्वारा घर में सास–ससूर को सम्मान नहीं देना आदि बातों का जीवंत एवं यथार्थ चित्रण काशीजी ने किया। काशीजी ने अपने बड़े भाई नामवर सिंह से बेरुखी का वर्णन किया है जो निम्न पंक्तियों में द्रष्टव्य है–

"बेटी की इस बेरुखी ने उनके 'अकेलेपन' को कितना गहरा और तीखा कर दिया था, इसका आभास तब मिला जब शाम ढलने लगी और हमने अगली यात्रा की तैयारी शुरू की। हमें कालका मेल पकड़नी थी। चाय के समय वे गुमसुम कोई मैग्जीन, उलटते रहे और जल्दी ही खत्म करके गीता बुक सेंटर चले गये।"[6]

कार्शीनाथ सिंह के संस्करणों में आम जन की भाषा का प्रयोग किया गया जो काशी और बनारस की आस–पास की भाषा है, इनके संस्मरणों के पात्र वैसे पात्र हैं जो काशीनाथ सिंह के आस–पास के हैं। इसलिए काशीनाथ सिंह कहानी और उपन्यास लेखन से ज्यादा संस्मरण लेखन में प्रसिद्धि प्राप्त किये हैं, इनके संस्मरणों की विशेषता को रेखांकित करते हुए डॉ. राजेन्द्र यादव ने लिखा है–

"अद्भुत रचना है काशी का संस्मरण–जिस ऊष्मा, सम्मान और समझदार संयम से लिखा गया है, वह पहली बार तो अभिभूत संयम से लिखा गया है, वह पहली बार तो अभिभूत कर लेता है। मैं इसे नामवरी सठियाना–समारोह की एक उपलब्धि मानता हूँ। साथ ही मेरी यह राय भी है कि अगर ऐसी कलम हो तो हिटलर को भी भगवान बुद्ध का अवतार बनाकर पेश किया जा सकता है। (मजाक अलग) व्यक्तित्व के अन्तर्विरोधों पर भी कुछ बात की जाती तो शायद और ज्यादा जीवन्त संस्मरण होता।"[7]

काशीनाथ सिंह के संस्मरण भाषा के कारण जीवंत हैं। बनारस के लोकजीवन, लोक संस्कृति, लोकसंस्कार का उजागर करने वाले शब्दों के कारण भाषा में एक प्रकार की रागात्मकता एवं आत्मनीयता का भाव निहित है।

सन्दर्भ

1. हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, डॉ. अमरनाथ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पाँचवां छात्र संस्करण, 2018, पृष्ठ संख्या–350.
2. हिन्दी साहित्यकोष भाग–1, प्रधान सम्पादक डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञान मंडल प्रकाशन वाराणसी, पुनर्मुद्रण संस्करण, जुलाई 2013, पृष्ठ संख्या–793.
3. आछे दिन पाछे गए, काशीनाथ सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2013, फ्लैप.
4. याद हो कि न याद हो– काशीनाथ सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पाँचवां परिवर्द्धित संस्करण, 2016, पृष्ठ संख्या–169.
5. आछे दिन पाछे गए, काशीनाथ सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2013, पृष्ठ संख्या–147.
6. घर का जोगी जोगड़ा–काशीनाथ सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहली आवृत्ति 2008, पृष्ठ संख्या–99.